Dil Badalne Wali 41 Baten (Hindi)

MAKTABATUL MADINA INDIA

हफ़्तावार रिसाला : 477
Weekly Booklet : 477

दिल बदलने वाली 41 बातें

(इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की किताब मिन्हाजुल आ़बिदीन से दूसरी क़िस्त़)

(सफ़ह़ात : 16)

इ़बादत व दुआ़ में लज़्ज़त पाने का नुस्ख़ा 03
ज़ियादा खाने की 10 आफ़तें 08
सब से मुश्किल काम 12
सीधा रास्ता 14

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖنَ ط

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

दिल बदलने वाली 41 बातें

दुआए अत्तार : या रब्बे करीम ! जो कोई 16 सफ़हात का रिसाला “दिल बदलने वाली 41 बातें” पढ़ या सुन ले, इमाम ग़ज़ाली (رَحْمَۃُ اللّٰهِ عَلَیْه) के सदक़े उस का दिल नेकियों से भरपूर और गुनाहों से दूर कर के उस को मां बाप और ख़ानदान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िला नसीब फ़रमा ।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बेशक अल्लाह पाक ने एक फ़िरिश्ता मेरी क़ब्र पर मुक़र्रर फ़रमाया है जिसे तमाम मख़्लूक़ की आवाज़ें सुनने की ताक़त दी है, क़ियामत तक जो कोई मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो वोह मुझे इस का और इस के बाप का नाम पेश करता है, कहता है : “फ़ुलां बिन फ़ुलां ने आप पर इस वक़्त दुरूदे पाक पढ़ा है ।” (مسند بزار، 4/255، حدیث:1425)

سُبْحٰنَ اللّٰه ! दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला किस क़दर बख़्तवर है कि उस का नाम मअ़ वल्दिय्यत बारगाहे रिसालत में पेश किया जाता है, यहां येह नुक्ता भी इन्तिहाई ईमान अफ़रोज़ है कि क़ब्रे मुनव्वर पर हाज़िर फ़िरिश्ते को इस क़दर ज़ियादा क़ुव्वते समाअ़त (यानी सुनने की ताक़त) दी गई है कि वोह दुनिया के कोने कोने में एक ही वक़्त के अन्दर दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले लाखों मुसलमानों की इन्तिहाई धीमी आवाज़ भी सुन लेता है । जब ख़ादिमे दरबार की क़ुव्वते समाअ़त का येह ह़ाल है तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इख़्तियारात की

क्या शान होगी ! वोह क्यूं न अपने ग़ुलामों को पहचानेंगे और क्यूं न उन की फ़रियाद सुन कर बिइज़्निल्लाह (यानी अल्लाह पाक की इजाज़त से) उन की इमदाद फ़रमाएंगे !

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 264)

मैं क़ुरबां इस अदाए दस्तगीरी पर मेरे आक़ा मदद को आ गए जब भी पुकारा या रसूलल्लाह

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾1﴿ मुत्तक़ी को मुत्तक़ी क्यूं कहते हैं ?

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तक़्वा वालों को मुत्तक़ी इस लिए कहा गया कि उन्हों ने ना जाइज़ में पड़ने के ख़ौफ़ से जाइज़ को भी छोड़ दिया।

(ترمذی، 4/204، حدیث:2459 بتغیر, मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 60)

शर्हे ह़दीस : यानी मुत्तक़ी इन्सान बाज़ ह़लाल चीज़ों को भी छोड़ देता है कि कहीं वोह शुब्हे वाली चीज़ (यानी जिस के ह़लाल या ह़राम का इ़ल्म न हो) में न पड़ जाए और शुब्हे से भी पुख़्ता है कि कहीं ह़राम में न पड़ जाए, इसी त़रह़ फ़ुह़श या झूट में मुब्तला होने के ख़ौफ़ से बाज़ जाइज़ बातों को छोड़ देता है और ह़दीस रिवायत करने वाले (के ह़ालात) का इ़ल्म न होने या इस का इ़ल्म तो हो लेकिन उस की रिवायत पर एतिमाद न होने की वजह से उस ख़ौफ़ से रिवायत नहीं करता कि कहीं उस की ह़दीस मौज़ूअ़ (यानी मनघड़त) न हो।

(المفاتیح فی شرح المصابیح، 3/399)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

«2» निगाहों की हिफ़ाज़त

बन्दा कभी ऐसी नज़र डालता है जिस के सबब दिल ऐसा बिगड़ता है जैसे खाल बिगड़ जाती है। वलिए कामिल ह़ज़रते ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "शहवतों (यानी ख़्वाहिशात) के लिए सब से अच्छी रुकावट निगाहें नीची रखना है।" (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 62)

«3» इ़बादत व दुआ़ में लज़्ज़त पाने का नुस्ख़ा

इ़बादत की मिठास और दुआ़ की लज़्ज़त इ़बादत गुज़ारों के नज़्दीक बहुत बड़ी चीज़ है और इस के लिए ह़दीस : (औ़रत के हुस्नो जमाल की त़रफ़ देखना इब्लीस के ज़हर आलूद तीरों में से एक तीर है तो जिस ने इसे तर्क किया अल्लाह पाक उसे इ़बादत का ऐसा मज़ा चखाएगा जो उसे ख़ुश कर देगा। (مسند الفردوس،4/297،حدیث:6872)) वाला अ़मल मुजर्रब (यानी आज़माया हुवा) है, जो इस पर अ़मल करेगा उसे इस का यक़ीन हो जाएगा, बेशक जब वोह फ़ुज़ूल चीज़ों से अपनी नज़र की ह़िफ़ाज़त करेगा तो इ़बादत की लज़्ज़त व मिठास और दिल की ऐसी सफ़ाई पाएगा जो इस से पहले कभी न थी। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 63)

«4» फ़ुज़ूल गुफ़्तगू का वबाल

ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जब तुम अपने दिल में सख़्ती, बदन में कमज़ोरी और रिज़्क़ में तंगी देखो तो जान लो कि तुम ने ज़रूर कोई फ़ुज़ूल बात मुंह से निकाली है।" (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 65)

«5» ग़ीबत की तबाहकारी

ग़ीबत तो नेकियों को तबाह कर देने वाली बिजली है, मन्क़ूल है कि "लोगों की ग़ीबत करने वाले की मिसाल उस शख़्स की त़रह है जो एक मिन्जनीक़

(पत्थर फेंकने का आला) नस्ब कर ले और उस के ज़रीए अपनी नेकियां मशि्रक़ व मग़रिब और शुमाल व जुनूब चारों त़रफ़ फेंकता रहे।" (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 65)

﴾6﴿ एक मश्हूर कहावत

एक मश्हूर कहावत है कि "बहुत से अल्फ़ाज़ बन्दे से कहते हैं : हमें मुंह से मत निकालो।" (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 66)

﴾7﴿ अल्लाह पाक पर सब ज़ाहिर है

बन्दों को डराने और ख़बरदार करने के लिए इतना ही काफ़ी है कि "**अल्लाह पाक दिलों के ह़ाल जानता है।**" क्यूंकि ग़ैबों के जानने वाले के साथ मुआ़मला बड़ा नाज़ुक है तो ग़ौर करो कि तुम्हारे दिलों के कैसे कैसे ख़यालात को वोह जानता है। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 68)

﴾8﴿ लम्बी उम्मीद और मौत की याद

जब तुम्हें लम्बी ज़िन्दगी की उम्मीद होगी तो तुम मौत और क़ब्र को भूल जाओगे। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 72)

﴾9﴿ दिल की नर्मी और सफ़ाई का त़रीक़ा

दिल तो मौत व क़ब्र, सवाब व अ़ज़ाब और आख़िरत के अह़वाल याद करने से नर्म और साफ़ होता है और जब उन में से तुम्हारे पास कुछ भी नहीं होगा तो दिल कहां से नर्म और साफ़ होगा ? (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 72)

﴾10﴿ दुनिया तीन सांस की है

हमारे (यानी इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के) शैख़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इस फ़रमान पर ग़ौर करो कि "दुनिया तीन सांसों की है, एक सांस जो तुम ले चुके और इस में जो अ़मल करना था कर चुके, एक सांस वोह जो तुम ले रहे हो और एक आने

वाली सांस जिस की तुम्हें ख़बर नहीं कि ले भी सकोगे या नहीं।" कितने ही सांस लेने वालों को मौत अगली सांस से पहले ही आ दबोचती है। लिहाज़ा तुम्हारे पास एक ही सांस है न कि एक घड़ी और एक दिन, तो इस से पहले कि मौत आ जाए इसी एक सांस में इबादत और तौबा की तरफ़ जल्दी करो।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 73)

﴾11﴿ ह़सद जहन्नम में पहुंचाने वाला है

ह़सद नेकियों को ख़राब करता और गुनाहों पर उभारता है और येह ऐसी बीमारी है जिस में बहुत से लोग मुब्तला हैं, ह़सद लोगों को हलाक कर के जहन्नम पर पेश कर देता है। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 74 मुलख़्ख़सन)

﴾12﴿ नाराज़िए रब के ह़क़दार कौन ?

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! तुझे अपनी मख़्लूक़ में सब से ज़ियादा ना पसन्द कौन है ? इरशाद फ़रमाया : जिस के दिल में तकब्बुर, ज़बान पर फ़ुह़्श गोई, नेकियों से आंखें फेरने वाला, हाथों का कन्जूस और अख़्लाक़ में बुरा हो। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 77)

﴾13﴿ लम्बी उम्मीदें रखने वाला कौन ?

अगर तुम यक़ीनी तौर पर येह ज़ेहन बना लो कि मैं अगली सांस या अगली घड़ी या अगले दिन तक लाज़िमी ज़िन्दा रहूंगा तो तुम लम्बी उम्मीद करने वाले हो और येह तुम्हारी तरफ़ से ना फ़रमानी है क्यूंकि येह ग़ैब (यानी छुपे हुए मुआ़मले) पर हुक्म लगाना है और अगर तुम अल्लाह पाक के इ़ल्म व इरादे के साथ अपने इरादे को पाबन्द कर दो और यूं कहो : अगर अल्लाह पाक ने चाहा तो मैं ज़िन्दा रहूंगा या अगर इ़ल्मे इलाही में अभी मेरी ज़िन्दगी बाक़ी है तो मैं ज़िन्दा रहूंगा। ऐसी सूरत में तुम लम्बी उम्मीद करने वाले नहीं बल्कि उम्मीद को तर्क करने वाले कहलाओगे। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 78)

《14》 मौत की याद

याद रखो ! उम्मीदों की कमी का क़ल्आ (यानी ज़ियादा उम्मीदों से बचने का ज़रीआ) मौत की याद है और इस क़ल्ए का क़ल्आ (यानी इस को मज़ीद मज़बूत बनाने का त़रीक़ा) बे ख़बरी व ग़फ़लत में अचानक आने वाली मौत को याद करना है।

गुफ़्तगू का येह ख़ुलासा याद कर लो और इस पर अ़मल करो क्यूंकि इस की बहुत ज़ियादा ज़रूरत है और लोगों से मुलाक़ातों और बह़सो मुबाह़से में अपना वक़्त ज़ाए करना छोड़ दो। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 79)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

《15》 अपने अन्दर आ़जिज़ी पैदा करने का त़रीक़ा

नफ़्स को कमतर और ह़क़ीर जानने के ख़याल को "तवाज़ो (यानी आ़जिज़ी)" कहते हैं, आ़जिज़ी की सिफ़त अपने अन्दर पैदा करने के लिए ह़क़ से मुंह फेरने और बात़िल में बढ़ने वालों का अन्जाम याद करो।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 81)

《16》 ह़राम ग़िज़ा और ज़रूरत से ज़ियादा खाने का वबाल

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है : अल्लाह पाक ऐसे शख़्स की नमाज़ क़बूल नहीं करता जिस के पेट में ह़राम ग़िज़ा हो।

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ **फ़रमाते हैं :** बाक़ी रहा फ़ुज़ूल और ज़रूरत से ज़ाइद ह़लाल तो उस का इस्तिमाल भी बन्दों के लिए आफ़त और इ़बादत में ख़ूब मेह़नत करने वालों के लिए बला है। ज़ियादा खाने से दिल में सख़्ती पैदा होती है और नूर दूर जाता है, बाज़ नेक बन्दों ने उस की मिसाल यूं दी है कि मेदा

दिल के नीचे एक उबल्ती हुई हन्डिया की त़रह़ है तो मेदे से बुख़ारात दिल को चढ़ते हैं और उन की वजह से दिल मैला और ख़राब हो जाता है। उस्ताद अबू जाफ़र رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ने क्या ख़ूब फ़रमाया है : पेट एक ऐसा उ़ज़्व है कि अगर वोह भूका हो तो जिस्म के बाक़ी आज़ा भरे हुए होते (यानी पुर सुकून होते हैं) किसी शै का मुत़ालबा नहीं करते और अगर पेट भरा हुवा हो तो दूसरे आज़ा भूके होते हैं (यानी मुख़्तलिफ़ बुराइयों की त़रफ़ रुजूअ़ करते हैं।) अगर पेट में ह़राम ग़िज़ा जाएगी तो ह़राम कामों की सूरत में बाहर आएगी और अगर फ़ुज़ूल और ज़रूरत से ज़ियादा ग़िज़ा पेट में दाख़िल होगी तो वोह फ़ुज़ूलिय्यात की सूरत में बाहर आएगी, गोया ग़िज़ा बीज है काम और बातें इस बीज का पौदा हैं जो बीज के मुत़ाबिक़ उगता है। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 82, 83 मुल्तक़त़न)

﴾17﴿ तन्हाई और भूक

ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : इ़बादत एक पेशा (Profession) है, इस की दुकान तन्हाई (Loneliness) है और इस का आला (Instrument) भूक है। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 84)

﴾18﴿ ह़लाल बक़द्रे ज़रूरत ही आता है

नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ह़लाल तेरे पास बक़द्रे ज़रूरत ही आएगा और ह़राम तेरे पास बे तह़ाशा आएगा।

(تفسیر ثعلبی، پ9، الاعراف، تحت الآیۃ:163تا166، 4/296) (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 84)

﴾19﴿ आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुसूसिय्यत

अल्लाह पाक ने जब हमारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुनिया पेश की तो इरशाद फ़रमाया : "इस के बदले

में आप की आख़िरत में से कुछ कमी नहीं करूंगा।" रब्बे करीम ने इस फ़ज़ीलत के साथ आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ास फ़रमा दिया है। पस येह इस बात की दलील है कि औरों को आख़िरत में सवाब की कमी का सामना होगा सिवाए उस के जिस पर अल्लाह पाक अपना फ़ज़्ल फ़रमाए। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 85)

﴾20﴿ ज़ियादा खाने के दुनियावी और उख़रवी नुक़्सानात

ज़ियादा खाने के सबब आख़िरत में ह़िसाबो किताब के लिए रुकना पड़ेगा और ज़रूरत से ज़ियादा ह़लाल ले कर और ख़्वाहिशात में पड़ कर जो तर्के अदब किया होगा उस पर शर्मिन्दा किया जाएगा क्यूंकि दुनिया के ह़लाल पर ह़िसाब, ह़राम पर अ़ज़ाब और उस की ख़ूबसूरती पर आख़िरत में नुक़्सान व ख़सारा है।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 85)

﴾21﴿ ज़ियादा खाने की 10 आफ़तें

﴾1﴿ दिल की सख़्ती ﴾2﴿ आज़ा में शर अंगेज़ी ﴾3﴿ फ़हमो फ़िरासत में कमी ﴾4﴿ इ़बादत में कमी ﴾5﴿ इ़बादत की मिठास ख़त्म ﴾6﴿ ह़राम में पड़ने का ख़त़रा ﴾7﴿ त़रह़ त़रह़ की मसरूफ़ियत ﴾8﴿ मौत की सख़्तियां ﴾9﴿ सवाब में कमी ﴾10﴿ आख़िरत की शर्मिन्दगी। ज़ियादा खाने की येह 10 मुसीबतें हैं मगर अपनी फ़िक्र करने वाले के लिए एक ही काफ़ी है।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 82 ता 85 मुल्तक़त़न)

﴾22﴿ परहेज़गारी के रास्ते पर चलने के लिए

तक़्वा (यानी परहेज़गारी) का रास्ता बहुत मुश्किल है, इस पर चलने वाले के लिए शर्त़ है कि वोह अपने नफ़्स और दिल को तकालीफ़ बरदाश्त करने पर मज़बूत करे वरना वोह उस राह पर नहीं चल सकेगा। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 88)

﴾23﴿ किस खाने पर ह़िसाब नहीं बल्कि सवाब है ?

बन्दा ह़लाल व मुबाह़ रिज़्क़ को अल्लाह पाक की इ़बादत पर त़ाक़त ह़ासिल करने की निय्यत से बक़द्रे ज़रूरत ह़ासिल करे कि इतना ह़ासिल करना ज़रूरत में शामिल है और फिर इसी को काफ़ी समझे तो येह उस की त़रफ़ से ख़ैर, नेकी और अदब है और उस पर ह़िसाब है न अ़ज़ाब बल्कि वोह उस पर सवाब व तारीफ़ का ह़क़दार है। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 90)

﴾24﴿ दुनियावी दोस्ती में फ़ुज़ूल वक़्त गुज़ारने वालों के लिए लम्ह़ए फ़िक्रिया

याद करो कि तुम्हें क़ब्र में डालने के तीन दिन बाद तुम्हारे दोस्त रिश्तेदार तुम्हें कैसे छोड़ देंगे और भूल जाएंगे बल्कि तुम्हारी याद भी नहीं रहेगी गोया न तुम ने उन्हें कभी देखा और न उन्हों ने तुम्हें कभी देखा था, क़ब्र में अल्लाह पाक के सिवा कोई पुरसाने ह़ाल (यानी ख़ैर ख़बर लेने वाला) न होगा। तो क्या येह खुला धोका नहीं है कि तुम उस मख़्लूक़ के साथ अपना वक़्त ज़ाए करो जब कि उन की त़रफ़ से वफ़ादारी और दोस्ती बहुत थोड़े वक़्त की है और उन के साथ रहना भी बहुत थोड़ा है ? क्या येह खुला धोका नहीं कि तुम इन दोस्तियों की वजह से अल्लाह पाक की इ़बादत छोड़ रहे हो ह़ालांकि आख़िरेकार उसी की त़रफ़ लौटना है, वोही हमेशा हमेशा तुम्हारा साथ देने वाला है, तमाम ज़रूरतें उसी की त़रफ़ लौटती हैं, सारा भरोसा उसी पर है और हर ह़ाल और हर मुसीबत व परेशानी के वक़्त वोही ला शरीक ज़ात मददगार है। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 93)

﴾25﴿ नफ़्स की ख़बासत सत्तर शैत़ानों की ख़बासत से ज़ियादा है

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने सच फ़रमाया कि "नफ़्स की जहालत और उस की कमीनगी तुझे उस वक़्त मालूम हो जाएगी जब येह किसी गुनाह का इरादा करे

या किसी ख़्वाहिश के लिए तय्यार हो जाए और तू उसे अल्लाह पाक, उस के तमाम अम्बिया व रुसुल عَلَيْهِمُ السَّلَام, तमाम आस्मानी किताबों और तमाम बुज़ुर्गों का वासिता दे और मौत, क़ब्र और जन्नत व दोज़ख़ का मुआमला इस पर पेश करे तो तब भी येह बाज़ नहीं आएगा और अपनी ख़्वाहिश को नहीं छोड़ेगा।"

(मिन्हाजुल आबिदीन, स. 94)

﴾26﴿ गुनाह छोड़ना नेकियां करने से ज़ियादा अच्छा

बचने से मुराद गुनाहों और बुराइयों से बचना है और येह तक़्वा (यानी परहेज़गारी) है और इन दोनों से बचने वाली सूरत ही ज़ियादा दुरुस्त और अफ़ज़ल है क्यूंकि जो ख़ूब इबादत करने वालों के इब्तिदाई दर्जे (initial stages) पर होते हैं उन की सारी कोशिश येही होती है कि दिन रोज़े में और रात इबादत में गुज़रे और वोह इसी में लगे रहते हैं जब कि इबादत गुज़ारों में इन्तिहाई दर्जा (Extrem level) वाले अस्हाबे बसीरत "इज्तिनाब" यानी बचने को तरजीह देते हैं, उन की सारी कोशिश येह होती है कि उन का दिल अल्लाह पाक के सिवा किसी की तरफ़ मुतवज्जेह न होने पाए, येह हज़रात पेट को ज़रूरत से ज़ाइद हलाल से, ज़बान को फ़ुज़ूल बातों से और आंखों को बेकार चीज़ों की तरफ़ उठने से बचाते हैं।

(मिन्हाजुल आबिदीन, स. 95)

﴾27﴿ परहेज़ आधा नहीं पूरा इलाज है

मन्क़ूल है कि (पहले ज़माने में) अहले हिन्द मरीज़ का ज़ियादा तर इलाज परहेज़ से करते थे, उन के हां मरीज़ को चन्द दिनों तक खाने, पीने और गुफ़्तगू करने से रोक दिया जाता तो वोह तन्दुरुस्त हो जाता था। (मिन्हाजुल आबिदीन, स. 96)

﴾28﴿ एक लुक़्मे और बुरी नज़र की नुहूसत

एक लुक़्मे से दिल की ह़ालत ऐसी बदलती है कि कभी भी दिल अपनी अस्ली ह़ालत पर वापस नहीं आता और कभी एक लुक़्मा रात की इ़बादत से मह़रूम कर देता है और कई बार ऐसी नज़र उठती है कि बन्दा एक सूरत की तिलावत नहीं कर पाता और कभी ऐसा खा लेता है जिस के सबब पूरे साल इ़बादत नसीब नहीं होती। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 97)

﴾29﴿ दिल की इस्लाह़ सब से मुश्किल है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं ने 10 साल दिल, 10 साल ज़बान और 10 साल नफ़्स की इस्लाह़ की तो उन में सब से मुश्किल दिल की इस्लाह़ को पाया। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 98)

﴾30﴿ नफ़्स बन्दे के ताबेअ़ है

बन्दा नफ़्स को जैसा रखता है येह वैसा ही रहता है, अगर इसे खिलाया जाए तो ख़्वाहिश करता है वरना मुत़मइन रहता है। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 102)

﴾31﴿ रिज़्क़ देने पर क़सम

अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अल्लाह पाक की लानत हो ऐसे लोगों पर जिन्हें अल्लाह पाक की क़समों का भी यक़ीन नहीं। जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई : ﴿فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ﴾ (پ26،الذٰریٰت:23) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो आस्मान और ज़मीन के रब की क़सम बेशक येह क़ुरआन ह़क़ है।

तो फ़िरिश्तों ने कहा : बनी आदम के लिए हलाकत हो उन्हों ने अपने रब्बे करीम को नाराज़ किया ह़त्ता कि उस ने उन्हें रिज़्क़ देने पर क़सम इरशाद फ़रमाई। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 106)

﴾32﴿ मेरा मुआ़मला अल्लाह पाक के सिपुर्द है

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : हमारे शैख़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपनी मजलिसों में अक्सर फ़रमाया करते थे : "دَعِ التَّدْبِيْرَ اِلٰى مَنْ خَلَقَكَ تَسْتَرِحْ" यानी तदबीर को अपने पैदा करने वाले पर छोड़ दो तुम पुर सुकून हो जाओगे।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 113)

﴾33﴿ पक्का इरादा चाहिए

मैं (यानी इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़रमैन अबुल मआ़ली जुवैनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को इस मस्अले में येह फ़रमाते सुना कि अल्लाह पाक ने नमाज़, रोज़ा और ह़ज वग़ैरा जो भी बन्दे पर फ़र्ज़ फ़रमाए हैं उन में बिल यक़ीन बन्दे के लिए बेहतरी है। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 116)

﴾34﴿ सब से मुश्किल काम

इ़बादत में मेह़नत व मशक़्क़त की वजह से उस की तरग़ीब दिलाई गई और इस पर सवाब का वादा किया गया क्यूंकि बन्दा ख़्वाहिश को मार कर और नफ़्स पर ज़बरदस्ती कर के ही इ़बादत कर सकता है, इस लिए कि नफ़्स और ख़्वाहिश नेकी और भलाई से रोकते हैं और उन की मुख़ालिफ़त करना इन्सान के लिए सब से मुश्किल काम है। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 120)

﴾35﴿ बड़ों के इम्तिह़ान भी बड़े होते हैं

जो जितना ज़ियादा अल्लाह पाक के क़रीब होता है दुनिया में उस के लिए मसाइबो आलाम भी इतने ही ज़ियादा होते हैं। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 121) क्या तुम ने अल्लाह पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान नहीं सुना : लोगों में सब से सख़्त आज़माइश अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की होती है फिर शहीदों की फिर दरजा बदरजा दीगर लोगों की।

(ترمذی، 4/179، حدیث:2406، دون ذکر "الشھداء")

«36» हर मुश्किल के बाद आसानी है

अ़रबी अश्आ़र का तर्जमा : मायूस हरगिज़ न हो, अगर्चे मुत़ालबे को अ़र्सा गुज़र जाए, अगर तू सब्र से मदद लेगा तो कुशादगी (यानी आसानी) को देख लेगा। अपनी ज़रूरत पा लेने वाले सब्र करने वाले की त़रह़ हो जा और दाख़िल होने के लिए दरवाज़ों पर मुसल्सल दस्तक देने वाले की त़रह़ हो जा।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 122)

«37» सिर्फ़ रिज़्क़ की फ़िक्र में अपने आप को थकाने वालो !

अल्लाह पाक की इ़बादत में पेश आने वाली रुकावटों में सब से बड़ी और सब से मुश्किल रुकावट "**रिज़्क़ का मुआ़मला**" है। इस की फ़िक्र मख़्लूक़ के लिए सब से बड़ी मुसीबत है। मख़्लूक़ ने उस के लिए अपनी जानों को थका दिया, दिल फ़िक्रों में फंस गए, उस के ग़म में ग़म बढ़ गए, अपनी उ़म्रें ज़ाएअ़ कर दीं और उस की वजह से बड़े बड़े गुनाहों का बोझ अपने सर ले लिया। इस रिज़्क़ की फ़िक्र ने मख़्लूक़ को अल्लाह पाक और उस की इ़बादत से दूर कर के दुनिया और मख़्लूक़ की ख़िदमत में लगा दिया है लिहाज़ा दुनिया में उन्हों ने अन्धेरे, ग़फ़लत, नुक़्सान और ज़िल्लतो रुस्वाई में ज़िन्दगी गुज़ारी और आख़िरत की त़रफ़ ख़ाली हाथ चल पड़े, अगर अल्लाह पाक ने अपने फ़ज़्ल से रह़म न फ़रमाया तो वहां उन्हें ह़िसाब और अ़ज़ाब का सामना होगा। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 124)

«38» अल्लाह पाक मेरे मुआ़मले में बेहतरी को मुझ से ज़ियादा जानता है

एक बुज़ुर्ग رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ को अल्लाह पाक की जानिब से इशारा हुवा कि मांग तुझे दिया जाएगा। वोह तौफ़ीक़ याफ़्ता थे, बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करने लगे : हर मुआ़मले को हर त़रह़ से जानने वाला हर लिह़ाज़ से नावाक़िफ़ बन्दे से फ़रमाता है कि मांग तुझे दिया जाएगा, भला मैं क्या जानूं कि मेरे लिए क्या बेहतर

है जो मैं उस का सुवाल करूं ? पस मेरे लिए तू ही पसन्द फ़रमा।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 131)

﴾39﴿ सब जहां तेरे लिए है और तू ख़ुदा के वासित़े

कोई शख़्स तुम से कहे कि मैं तुम्हारे सारे काम कर दूंगा और तुम्हारी तमाम ज़रूरतों की बेहतरीन तदबीर करूंगा, तुम अपने सारे मुआ़मलात मेरे ह़वाले कर के बे फ़िक्र हो जाओ और वोह शख़्स तुम्हारे नज़्दीक अपने वक़्त का सब से बड़ा आ़लिम, सब से ज़ियादा अ़क़्लमन्द, क़ाबिले भरोसा, सच्चा और सब से ज़ियादा वफ़ादार हो तो क्या तुम उस की इस बात को अपने लिए ग़नीमत और बहुत बड़ी नेमत नहीं समझोगे ? और क्या तुम उस के एह़सान मन्द नहीं होगे ? फिर अगर वोह तुम्हारे लिए कोई ऐसी चीज़ मुन्तख़ब कर ले जिस में तुम्हें कोई बेहतरी नज़र न आती हो तो फिर भी तुम परेशान नहीं होगे बल्कि उस शख़्स की तदबीर पर मुत़मइन हो जाओगे और तुम्हें यक़ीन होगा कि येह शख़्स मेरे लिए बेहतर चीज़ का ही इन्तिख़ाब करेगा और तुम्हारे लिए भला ही सोचेगा अगर्चे बाद में अन्जाम कुछ भी हो मगर क्या तुम्हें इस पर मुकम्मल एतिमाद नहीं होगा ? जब एक बन्दे पर तुम्हारे एतिमाद का येह ह़ाल है तो फिर तुम्हें क्या हो गया है कि अपने काम तमाम जहानों के **रब्बे करीम** के ह़वाले क्यूं नहीं करते ह़ालांकि ज़मीन और आस्मानों की तदबीर फ़रमाने वाला वोही है, सब से बढ़ कर आ़लिम, सब से बढ़ कर क़ादिर, सब से बढ़ कर मेहरबान और तमाम अग़्निया से ग़नी तर है।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 131, 132)

﴾40﴿ सीधा रास्ता

अल्लाह पाक पर ख़ालिस तवक्कुल के ज़रीए दिल को उस की पसन्दीदा चीज़ों से दूर करना, नफ़्स को पक्की (बुरी) आ़दतों से रोकना नीज़ अपने कामों का अन्जाम जाने बग़ैर उन की तदबीर छोड़ कर उन्हें अल्लाह पाक के ह़वाले कर

देना, नफ़्स को हुक्मे इलाही पर नाराज़ी और वावेला मचाने से रोकना (ह़ालांकि नफ़्स इस की जल्दी करता है) और ना पसन्द करने के बावुजूद नफ़्स को अल्लाह पाक की रिज़ामन्दी की लगाम देना और सब्र का घूंट पिलाना येह सब काम अगर्चे मुश्किल और निहायत सख़्त इलाज और भारी बोझ हैं लेकिन येही सीधा रास्ता है और इस का अन्जाम अच्छा और इस के अह़वाल नेक बख़्ती पर मुश्तमिल हैं। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 134)

﴾41﴿ मुसीबत आने पर सब्र का त़रीक़ा

जब तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे और वोह तुम्हें बुरी लगे तो फ़ौरन उस वक़्त अपने नफ़्स की निगरानी करो और अपना दिल क़ाबू में रखो ताकि वोह बेचैन न हो और न ही गिला शिक्वा करे क्यूंकि सब्रो तह़म्मुल का अस्ल मौक़ा येही होता है और उस वक़्त नफ़्स बे सब्री की त़रफ़ जल्दी से बढ़ता है। तुम अपने नफ़्स से कहो : **ऐ नफ़्स !** येह मुसीबत तो आ गई, अब इसे दूर करने की कोई तदबीर नहीं और अल्लाह पाक इस से बड़ी मुसीबत को भी दूर फ़रमा चुका है, बेशक मुसीबतें कई त़रह़ की और बहुत ज़ियादा होती हैं। अ़नक़रीब येह मुसीबत भी दूर हो जाएगी, येह तो एक बादल है जो छट जाएगा लिहाज़ा ऐ नफ़्स ! तू आ जाने वाली मुसीबत को दूर कर सकता है न ही बे सब्री का कोई फ़ायदा है तो थोड़ी देर के लिए सब्र का दामन थाम ले इस के बदले तुझे लम्बी ख़ुशी और बहुत ज़ियादा सवाब ह़ासिल होगा और ह़क़ीक़त येह है कि सब्रो तह़म्मुल के साथ कोई मुसीबत मुसीबत नहीं रहती पस तुम अपनी ज़बान को "اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّا اِلَیْهِ رَاجِعُوْنَ" कहने और दिल को उस शै की याद में लगा दो जिस की बदौलत तुम्हें अल्लाह पाक की बारगाह से अज्रो सवाब मिले और पक्के इरादों वाले अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ السَّلَام और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَیْهِم का बड़े बड़े मसाइब पर सब्र करना याद रखो।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 137)

फ़ेहरिस्त

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	01	परहेज़गारी के रास्ते पर चलने के लिए	08
मुत्तक़ी को मुत्तक़ी क्यूं कहते हैं ?	02	किस खाने पर हिसाब नहीं बल्कि सवाब है ?	08
निगाहों की हिफ़ाज़त	02	नफ़्स की ख़बासत सत्तर शैतानो से ज़ियादा है	09
इबादत व दुआ में लज़्ज़त पाने का नुस्ख़ा	03	गुनाह छोड़ना नेकियां करने से ज़ियादा अच्छा	10
फ़ुज़ूल गुफ़्तगू का वबाल	03	परहेज़ आधा नहीं पूरा इलाज है	10
ग़ीबत की तबाहकारी	03	एक लुक़्मे और बुरी नज़र की नुहूसत	10
अल्लाह पाक पर सब ज़ाहिर है	04	दिल की इस्लाह़ सब से मुश्किल है	11
लम्बी उम्मीद और मौत की याद	04	रिज़्क़ देने पर क़सम	11
दुनिया तीन सांस की है	04	मेरा मुआमला अल्लाह पाक के सिपुर्द है	11
नाराज़िए रब के ह़क़दार कौन ?	05	पक्का इरादा चाहिए	12
लम्बी उम्मीदें रखने वाल कौन ?	05	सब से मुश्किल काम	12
मौत की याद	05	हर मुश्किल के बाद आसानी है	12
अपने अन्दर आजिज़ी पैदा करने का त़रीक़ा	06	सिर्फ़ रिज़्क़ की फ़िक्र में अपने आप को थकाने वालो !	13
ह़राम ग़िज़ा और ज़रूरत से ज़ियादा खाने का वबाल	06	अल्लाह पाक मेरे मुआमले में बेहतरी को मुझ से ज़ियादा जानता है	13
तन्हाई और भूक	07	सब जहां तेरे लिए है और तू ख़ुदा के वासित़े	14
आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुसूसिय्यत	07	सीधा रास्ता	14
ज़ियादा खाने के दुनियावी और उख़्रवी नुक़्सानात	08	मुसीबत आने पर सब्र का त़रीक़ा	15

अगले हफ़्ते का रिसाला

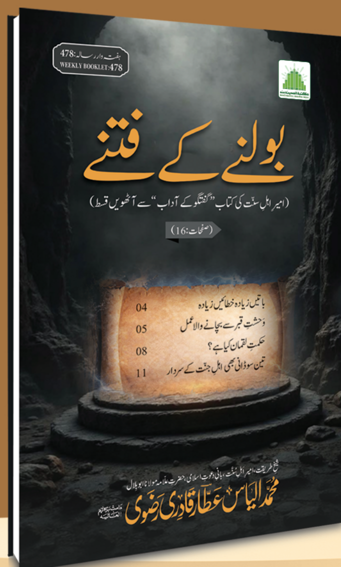

DAWAT-E-ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025